# स्वर विहार की प्रथम संगीत सभा

□ राजेश गनोदवाले

विगत २० नवंबर को भिलाई नगर में सुगम संगीत संस्था 'स्वर बिहार' ने अपनी प्रथम सभा उभरते हुये नवागंतुक कलाकारों के ओजपूर्ण गायन से आरंभ की।

सुगम संगीत के इस गुलदस्ते में जिन पुष्पों को पिरोया गया था, वे थे, सर्वश्री अश्विनी वर्मा (भिलाई) देवी प्रसाद तिवारी (बिलासपुर) भूपेंद्र सिंग सलूजा (राजनांदगांव) निर्मल बैद (रायपुर) एवं सुश्री स्वाति पानसे व सुश्री नमिता तिवारी (भिलाई नगर)।

कार्यक्रम का आरंभ सरस्वती वंदना के द्वारा हुआ पश्चात संगीत, सभा के प्रथम दौर का शुभारंभ करते उद्घोषिका अनिता सावंत ने भिलाई की नमिता तिवारी को मंच पर आमंत्रित किया- नमिता ने क्रमशः भजन एवं गजल सुनाकर पहले दौर का अपना निर्धारित कोटा पूरा किया। इसी के बाद स्वाति पानसे ने दो गजलें 'होठ सागर है आंख पैमाना एवं' जब तेरी राह से होकर गुजरे', सुनाई। दोनों गायिकाओं की आवाज में मिठास तो है साथ ही सुरीला पन भी (रायपुर) से आमंत्रित श्री निर्मल बैद ने गुरूनानक देव का भजन ठाकुर तुम शरणाई आया एवं तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊं मैं' सुनाकर अपनी भूमिका का बखूबी निर्वाह किया।

भूपेन्द्र सिंह सलूजा ने भजन एवं गजल लज्जते ग़म बढ़ा दीजिए, इसी कड़ी को जारी रखते हुये बिलासपुर के श्री देवी प्रसाद तिवारी गजल सुनाकर अपनी अभिव्यक्ति को संबल प्रदान किया।

[illegible]

उद्घोषित ने जवा अश्विनी वर्मा को मंच पर आमंत्रित किया तब सारा प्रेक्षक गृह तालियों की गड़बड़ाहट से गूंज उठा, निः संदेह, अश्विनी वर्मा किसी परिचय के मोहिताज नहीं हैं। एवं रतन चंद वर्मा के चिरंजीव अश्विनी वर्मा की ख्याति भी अपने पिता की भांति ही अपने लक्ष्य पर केन्द्रित होती जा रही है। एक अलग और अनूठा अंदाज पाया है, आवाज में कशिश तो है, साथ ही गंभीरता भी, शेरों के चुनाव में भी उनकी काव्यात्मक समझ का बोध झलकता है। 'अश्क आखों में भर-भर आए हैं, इन दिनों जब भी वो याद आए हैं' (करम) 'दिल अभी दिल से मिलाओ तो कोई बात बने, तुम मुझे अपनाबनाओ तो कोई बात बनें' (करम) 'बुरा कह दिया, भला कह दिया, बस अब हमने जो कह दिया कह दिया' (जोश मत्सियानी) अश्विना वर्मा की गाई इन गजलों के साथ ही पांच मिनट के मध्यांतर के पश्चात दूसरा दौर आरंभ हुआ, इस दौर में भी सभी ने दो-दो गजलें सुनाई।

कन्या उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर ५ में आयोजित इस कार्यक्रम को सुनने बड़ी संस्था में संगीत प्रेमी उपस्थित थे आरंभ में सभी कलाकारों की स्मृति चिन्ह देकर संस्था की ओर से स्वागत किया गया। उक्त पूरे कार्यक्रम में संगति करने वाले कलाकार थे (तबला) सर्वश्री मदन चौहान, महेन्द्र सिंह चौहान, भालचंद्र रोंगकर एवं मणिशंकर, (हारमोनियम) [illegible]

सर्वेश्वर दास एवं आर्गन पर थे श्री बज्रदीपन दास गुप्ता।

नए कलाकारों को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से गठित की गई इस संस्था के प्रथम कार्यक्रम पर नुक्ताचीनी करना, पूर्वाग्रह दर्शाना होगा फिर भी एक बात जो कहना जरूरी है वो यह कि आयोजक गण कलाकारों से स्वयं की तैयार बंदिशों को सुनाने का आग्रह करें, तो बेहतर होगा। क्योंकि नए प्रतिभावान कलाकारों को सामने आना है तो स्वयं के ही बलबूते पर न कि किसी बैशाखी के सहारे आशा है नए कलाकार इसे एक सलाह के रूप में स्वीकारेंगे, न कि नुक्ताचीनी के रूप में।

25/11/90